मॉड्यूल 2: माध्यम, तकनीक और शैली

4. पारंपरिक और समकालीन विधि और सामग्री
5. लोककला के प्रतीक एवं अभिप्राय
6. लोक व जनजातीय कला का महत्व और उपयोगिता
7. संभावना और अवसर

4

पारंपरिक और समकालीन विधि और सामग्री

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने इस क्षेत्र से जुड़े विद्वानों और कलाकारों के योगदान के विषय में जाना। इस पाठ में हम लोक और आदिवासी कला में प्रयोग किये जाने वाले पारंपरिक और समकालीन पद्धति एवं सामग्री के विषय में जानेंगे। मानव आरंभ से ही प्रकृति के निकट रहा है। उसकी हर आवश्यकता प्रकृति द्वारा ही विभिन्न माध्यमों से पूरी होती रही है। आदिमानव ने प्रकृति के अध्ययन एवं उसकी घटनाओं से प्रेरित होकर विभिन्न पद्धतियों का विकास किया। उसने आसपास के वातावरण में उपलब्ध प्राकृतिक उपादनों और वस्तुओं के परीक्षण और निरीक्षण से सहज उपलब्ध सामग्री का समुचित उपयोग करना सीखा। उसने पाया कि पेड़-पौधों के पत्ते, फल, फूल और छाल अनेक रंगों के हैं। मिट्टी और पत्थरों के भी अनेक रंग हैं। इनमें से कुछ सतह पर रगड़ने से अपने रंग छोड़ते हैं, कुछ पानी में घुलकर पानी को रंगीन बना देते हैं और कुछ को धरती की सतह पर रखकर विशेष आकार में निरूपित किया जा सकता है। कुछ जिज्ञासु लोगों ने अपने निरीक्षण में पाया होगा कि पानी में घुली मिट्टी धूप में सूखने पर सतह पर उसे जिस आकार में लगाया गया हो वैसी छाप छोड़ती है। उन्होंने यह भी पाया होगा कि रंगीन पत्थर पीसने पर एक विशेष रंग का चूर्ण प्राप्त होता है, जिसे प्रयोग में लाया जा सकता है। आदिवासी-लोककला में कलाकारों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले रंग और चित्रण पद्धतियाँ मानव के इन्हीं प्रयोगों का परिणाम हैं। ग्रामीण कला में इन्हीं रंगों का प्रयोग किया गया है।

सभ्यता के विकास के साथ-साथ आदिवासी-लोक चित्रकला की सामग्री एवं पद्धतियों में भी परिवर्तन हुए। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर एवं मध्य प्रदेश के भीमबेटका में मिले प्रागैतिहासिक कालीन गुफा चित्रों से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है, क्योंकि वे चित्र भी सफ़ेद मिट्टी या चूना तथा गेरू से बनाए गए हैं जो आदि चित्रकारों के अपने आसपास उपलब्ध सामग्री थी। इसके उपरांत सिंधु घाटी की सभ्यता से मिले चित्रित बर्तनों, खिलौनों एवं मूर्तियों से भी ज्ञात होता है कि उस समय के चित्रकारों ने सफ़ेद मिट्टी/चूना, गेरू एवं काली मिट्टी एवं काजल का प्रयोग चित्रांकन हेतु किया; किन्तु ये रंग काली मिट्टी अथवा पशुओं की चर्बी में घोलकर संभवत: कूचियों की सहायता से लगाए गए थे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के उपरांत आप :

- आदिवासी एवं लोक चित्रों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री पर चर्चा कर सकेंगे;
- आदिवासी-लोक चित्रों में काम आने वाली पारंपरिक एवं अपारंपरिक समाग्रियों के स्वरूप को समझ सकेंगे;
- आदिवासी एवं लोक चित्रों में प्रयुक्त सामग्रियों में समय के साथ हुए बदलाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आदिवासी एवं लोक चित्रण की पद्धतियों को जान सकेंगे।

वर्तमान में प्रयोग की जाने वाली सामग्री

वर्तमान समय में यदि हम आदिवासी लोक चित्रों में प्रयुक्त होने वाली चित्रण सामग्री पर दृष्टिपात करें तो हमें उनमें प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समय तक एक निरंतरता दिखाई देती है। घर की दीवारों और आँगनों को गोबर-मिट्टी से लीपने के उपरांत उन पर बनाए जाने वाले चित्रों में आज भी विभिन्न रंगों की मिट्टी पेड़-पौधों के फूल-पत्तों एवं छाल से निकाले गए रंग, विभिन्न रंगों को पीस कर तैयार किए गए रंगीन चूर्ण; जैसे- प्राकृतिक, वनस्पति के एवं खनिज के रंगों का प्रयोग करने की पद्धति में कुछ परिवर्तन आया है।

कालांतर में सामाजिक व्यवस्था में बदलाव के साथ जाति व्यवस्था का उदय हुआ और अपने कार्यों एवं जीवनयापन के तरीकों के अनुरूप व्यावसायिक जातियाँ अस्तित्व में आईं। इनमें अनेक शिल्पी समुदायों; जैसे- सुनार, लोहार, कुम्हारों की भाँति व्यावसायिक चित्रकार अथवा चितेरे समुदाय का भी विकास हुआ। ये चित्रकार समुदाय के लोग व्यावसायिक स्तर पर लोक चित्रों का सृजन करते रहे और लोकजीवन की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते रहे। इन चित्रकारों ने लोकचित्रों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं चित्रण पद्धतियों में अनेक नए आयाम जोड़े और उनमें एक व्यवस्था उत्पन्न कर ली।

4.1 रंग

सर्वप्रथम हमें लोक ओर आदिवासी कलाओं में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के रंगों को जानना होगा।

शीर्षक	:	**रंग**
प्रकार	:	**एक्रायलिक प्लास्टिक, तेल आदि**
प्रयोग	:	**कला, लोककला, अनुष्ठान तथा गृह सज्जा आदि**

संक्षिप्त परिचय

औद्योगिक विकास के साथ बाज़ार में उपलब्ध रंगों, ब्रुशों एवं अन्य सहायक समाग्री के सहज उपलब्ध होने से आदिवासी एवं लोकचित्रों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में परिवर्तन आया है। विशेष

तौर से पिछले चार दशकों में जब से आदिवासी एवं लोक चित्रों का शहरी बाज़ार में विक्रय आरंभ हुआ है, तब से आदिवासी एवं लोकचित्रों की दो स्पष्ट श्रेणियाँ ही बन गई हैं। एक वे चित्र, जो जन सामान्य अथवा घरेलू स्त्रियाँ त्योहारों एवं अनुष्ठानों हेतु बनाती हैं और दूसरे वे चित्र, जो दक्ष आदिवासी-लोक चित्रकारों द्वारा शहरी बाज़ार में विक्रय हेतु बनाए जाते हैं। इन दोनों ही श्रेणियों के चित्रों की चित्रण सामग्री एवं चित्रण पद्धतियों मे अन्तर होता है। आमजन जहां प्राकृतिक एवं वनस्पति के रंगों एवं कपड़ें के टुकड़े एवं बॉस, घास या वृक्ष की टहनियों से बनी कूचियों का प्रयोग कर चित्र बनाते हैं, वहीं बाज़ार हेतु चित्रांकन के लिए बाज़ार में उपलब्ध तैयार रंगों एवं ब्रुशों आदि का प्रयोग होने लगा है।

पारंपरिक लोक कलाकृतियों का उपयोग पूजा अनुष्ठानों हेतु किया जाता था। अतः उनका प्रयोग केवल अनुष्ठान पूर्ति तक ही सीमित था। वर्तमान समय में इनका प्रयोग शहरी उपभोक्ताओं द्वारा गृहसज्जा हेतु किया जाने लगा, जिसके कारण इनके निर्माण में काम आने वाली सामग्री और निर्माण तकनीक में बहुत परिवर्तन आ गया है। अब इन्हें अधिक आकर्षक, चमकदार और मजबूत बनाना आवश्यक है। लोककला की पारंपरिक सामग्री में मिट्टी एवं वनस्पति रंग प्रयुक्त किए जाते थे, जो चमकरहित और कच्चे होते थे। वर्तमान में इनके स्थान पर एक्रायलिक, प्लास्टिक एवं तैलरंग प्रयोग में लाए जाते हैं जो अधिक स्थाई और चमकदार होते हैं।

चित्र 4.1: रंग

मूल लोक चित्रों की कीमत अधिक होती है। उनकी कीमत घटाने तथा कम समय में उनकी अधिक प्रतिलिपियाँ तैयार करने हेतु आजकल चित्र की आकृतियों की बाह्य रेखाएँ स्क्रीनप्रिंट पद्धति द्वारा

टिप्पणियाँ

छाप ली जाती हैं तथा उनमें हाथ से रंग भर दिए जाते हैं। इस प्रकार तैयार किए गए चित्र की कीमत बहुत कम हो जाती है।

आजकल कागज़ के स्थान पर लोकचित्रों को कैनवास पर अथवा प्लायबोर्ड पर भी बनाया जाने लगा है। कपड़े पर भी चित्र बनाए जाने लगे है। कपड़े पर फैब्रिक कलर एवं प्लायबोर्ड एवं कैनवास पर एक्रायलिक कलर प्रयुक्त किया जाता है तथा चित्र पर अतिरिक्त चमक लाने हेतु उस पर वार्निश का एक कोट भी किया जाने लगा है। बाज़ार में अच्छे दाम प्राप्त करने के लिए अब लोक चित्रकार अपने बनाए चित्रों की फ्रेमिंग-माउण्टिंग कराने लगे हैं। इससे चित्र अतिरिक्त सुंदरता तो प्राप्त करते ही हैं, उन्हें घर की दीवारों पर सजाना भी आसान हो जाता है।

सामान्य विवरण

रंग : सीधे ही प्रयोग में लाए जाने वाले रंग, जिन्हें आम लोगों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है; जैसे- विभिन्न रंगों की मिट्टियाँ लाल मिट्टी, काली मिट्टी, पीली मिट्टी, सफ़ेद मिट्टी, खड़िया, गेरू, चावल का आटा, आदि। इनका प्रयोग घरों में भित्ति एवं भूमि आलंकरण हेतु तथा मिट्टी के बर्तनों, खिलौने आदि पर रंगाकन एवं चित्रकारी हेतु किया जाता रहा है।

इन समाग्रियों का प्रयोग सूखे एवं गीले दोनों ही रूप में किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों की अनेक युवतियाँ चावल के सूखे आटे से अल्पना, रंगोली, अरिपन, चौक आदि बनाती हैं; जबकि वार्ली आदिवासी चावल के आटे को गीला कर बनाए गए लेप (पेस्ट) से भित्ति चित्र बनाते हैं।

दूसरे समूह में आने वाले रंग वे हैं, जिन्हें तैयार कर प्रयोग में लाया जाता है। उनका विकास अधिकांशत: व्यावसायिक चित्रकार जातियों से संबंधित चित्रकारों द्वारा किया जाता है। इन सामग्रियों एवं उनसे तैयार किए जाने वाले रंगों के सामान्यत: दो घटक होते हैं- एक, रंग उत्पन्न करने वाला पदार्थ और दूसरा, गोंद अथवा बाइन्डर जो उस रंग को चित्रण सतह पर चिपकने में सहायक होता है। आम तौर पर यह बाइंडर आम, नीम, बबूल या किसी अन्य वृक्ष का गोंद होता है। कभी-कभी बेलपत्र या कैंथ वृक्ष के फल के गूदे से तैयार पेस्ट भी बाइंडर के तौर पर काम में लाया जाता है।

सफ़ेद रंग : सफ़ेद रंग बनाने के लिए आमतौर पर खड़िया एवं चूने का प्रयोग तो किया ही जाता है, परंतु उत्तम प्रकार का सफ़ेद रंग बनाने के लिए उड़ीसा एवं बंगाल के पटचित्रकार समुद्र से प्राप्त होने वाले शंखों का प्रयोग करते हैं। शंख से सफ़ेद रंग तैयार करने हेतु उन्हें भली प्रकार साफ करके मिट्टी के बर्तन में गर्म किया जाता है। गर्म किए जाने से शंख फूल जाते हैं एवं उन्हें महीन पीसना आसान हो जाता है। पीसने के उपरांत चूर्ण को छान कर रख दिया जाता है। जब सफ़ेद रंग प्रयोग करना होता है, तब इस छने शंख चूर्ण को गोंद मिले पानी में घोलकर रंग बना लिया जाता है।

पीला रंग : पीला रंग प्राप्त करने के लिए हल्दी एवं हरताल (आर्सेनिक) का प्रयोग किया जाता है। हल्दी से प्राप्त पीला रंग गहरा एवं चमकदार होता है। रंग तैयार करने हेतु कच्ची हल्दी अथवा हरताल पत्थर को पीसकर महीन चूर्ण बना लिया जाता है, जिसे गोंद मिले पानी में घोलकर चित्रांकन किया जाता है।

सिंदूरी रंग : अत्यंत चमकदार नारंगी रंग प्राप्त करने हेतु सिंदूर का प्रयोग किया जाता है। आजकल सिंदूर का प्रयोग बहुत कम हो गया है। इसे किसी तेल में मिलाकर काम में लाया जाता है।

लाल रंग : लाल रंग भारतीय लोकचित्रों का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसे प्राप्त करने हेतु पलाश एवं गुड़हल के फूल तथा हिंगुल पत्थर का प्रयोग किया जाता है। हिंगुल को पीस कर उसके महीन चूर्ण को गोंद मिले पानी में मिलाकर रंग तैयार कर लिया जाता है।

गुलाबी रंग : गुलाबी रंग प्राप्त करने हेतु हिंगुल चूर्ण एवं शंख चूर्ण को आधी-आधी मात्रा में मिलाकर मिश्रण तैयार किया जाता है। इस मिश्रण में गोंद मिला पानी मिलाकर रंग बना लिया जाता है। कुछ स्थानों पर गुलाबी रंग के लिए महावर या आलता का भी प्रयोग किया जाता है।

हरा रंग : अधिकांश स्थानों पर हरा रंग किसी लता या वृक्ष के मुलायम पत्तों को रगड़कर प्राप्त किया जाता है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में सेम फली की लता के पत्तों से तथा मालवा क्षेत्र में बालौड़ वृक्ष के पत्तों से हरा रंग प्राप्त करते हैं। बंगाल, बिहार और ओड़िसा के लोक चित्रकार नील और पेवड़ी के मिश्रण से हरा रंग बनाते हैं।

चित्र 4.2

काला रंग : काली मिट्टी के अतिरिक्त रेखांकन हेतु गहरा काला रंग काजल से बनाया जाता है। काजल तैयार करने हेतु मिट्टी के तेल की चिमनी जलाकर उसे किसी मिट्टी के बर्तन से ढ़क दिया जाता है, चिमनी का धुँआ बर्तन की सतह पर जमा हो जाता है। इस प्रकार प्राप्त काले चूर्ण को गोंद मिले पानी में घोलकर काला रंग तैयार किया जाता है।

नीला रंग : नील का प्रयोग लोक एवं आदिवासी चित्रों में बहुतायत से होता है। नील को गोंद मिले पानी में घोलकर नीला रंग तैयार किया जाता है। कुछ चित्रकार अपराजिता वृक्ष के फूलों से भी नीला रंग तैयार करते हैं।

गोंद : गोंद द्वारा रंगों को पक्का और चमकदार बनाया जाता है। गोंद रंगों को चित्र फलक पर चिपकने में सहायता तो करता ही है, साथ ही रंगों को ब्रश द्वारा चित्र फलक पर लगाने योग्य भी बनाता है।

सामान्यत: खैर, बबूल, आम एवं कैंथ वृक्ष से प्राप्त गोंद का प्रयोग किया जाता है। गोंद प्राप्त करने हेतु इन वृक्षों के तने को अनेक स्थानों पर चाकू या कुल्हाड़ी से छील दिया जाता है। कुछ दिनों उपरांत वृक्ष से छीले गए स्थानों पर गोंद निकल कर इकट्ठा हो जाता है। इसे इकट्ठा कर सुखा लिया जाता है। बाद में इसे पीस कर मोटा चूर्ण बनाते हैं, जिसे पानी में घोलकर रंग में मिलाया जाता है।

सरेस : जानवर की चर्बी को सुखाकर रखते हैं। जब हमें रंग में मिलाना होता है, तो इस चर्बी को गर्म पानी में उबालकर गोंद के रूप में प्रयोग में लाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. मानव ने चित्रण पद्धतियों के विकास हेतु कहाँ से प्रेरणा ली?
2. आदिवासी लोक चित्रकारों ने चित्रण सामग्री का चुनाव किस प्रकार सीखा?
3. आदिमानव द्वारा बनाए गए अधिकांश गुफा चित्र किन रंगो से बनाए गए?
4. सिन्धु घाटी की सभ्यता से प्राप्त अवशेषों में चित्रण हेतु किस सामग्री का प्रयोग हुआ है?

क्रियाकलाप

एक कलर चार्ट बनाइए और रंगों के स्थानीय रूप से उपलब्ध स्रोतों को भी लिखिए।

रंग	स्रोतों

4.2 कूची अथवा तूलिका

शीर्षक : **कूची**

प्रयोग : **चित्रांकन**

सामग्री : **बाँस, घास, रूई का फाहा आदि**

प्रकार : **बाँस की तीली को चिकना कर, रूई के फाहे को कूची के सिरे पर बांधा जाता है**

संक्षिप्त परिचय

सामान्यत: आदिवासी एवं लोक चित्रकार हाथों की उंगलियों पर कपड़े के टुकड़े लपेटकर घास की तीलियों आदि की सहायता से चित्रांकन करते रहे हैं। इनमें वृक्ष की टहनियों के एक सिरे को कूटकर कूचियाँ बनाने का भी चलन रहा है। बाँस की तीलियाँ, खजूर के पत्ते के मध्य नाड़ी के टुकड़ों के एक सिरे को कूट कर कूचियाँ बनाई जाती हैं। बॉस या घाँस की तीली के सिरे पर रूई का फाहा लपेट कर भी चित्रांकन किया जाता है।

चित्र 4.3: कूची अथवा तूलिका

सामान्य विवरण

व्यावसायिक लोक चित्रकारों ने अपने चित्रांकन को अधिक परिमार्जित एवं रंगांकन को सरल बनाने हेतु उन्नत कूचियों या तूलिका का बनाना और प्रयोग करना आरंभ किया। उन्होंने तूलिका के दो भाग बनाए एक कूची का हत्था जो बाँस की तीली को चिकना कर तैयार कर दिया जाता है और दूसरा मुलायम बालों या रूई का फाहा जिसे कूची के एक सिरे पर बाँधा जाता है। रंगों की गुणवत्ता और चित्रांकन की जटिलता या महीनता के अनुरूप कूची हेतु बालों का चयन कर कूची बनाई जाती है। इसमें गिलहरी, चूहा, गाय, बकरी आदि की पूंछ के बालों का प्रयोग किया जाता रहा है।

पाठगत प्रश्न 4.2

रिक्त स्थान भरिए :

1. व्यावसायिक लोक चित्रकार .... प्रकार के ब्रुश बनाते हैं।
2. ब्रुश बनाने के लिए कलाकारों .... प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं।

4.3 अपारंपरिक सामग्री

शीर्षक : **अपारंपरिक सामग्री**

सामग्री : **स्याही, पोस्टर रंग, फैब्रिक, तेल रंग आदि**

प्रयोग : **कपड़ा एवं दीवार रंगने के लिए**

संक्षिप्त विवरण

जैसा कि इस पाठ में पहले भी कहा गया है कि औद्योगिक विकास एवं शहरीकरण के साथ पारंपरिक आदिवासी एवं लोक कथाओं मे प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं चित्रण पद्धतियों में भी

परिवर्तन आया है। ये परिवर्तन मुख्यत: इसलिए और मुखर हुए हैं, क्योंकि अब आदिवासी-लोक कथाओं के बनाने के उद्देश्य और उसके उपभोक्ता दोनों ही बदल गए हैं अथवा बदल रहे हैं। अब इन चित्रों का एक बड़ा भाग अनुष्ठानों एवं आयोजनों की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नहीं अपितु जीविकोपार्जन हेतु बनाया जाता है। अत: इन चित्रों का एक उत्पाद के रूप में टिकाऊ और आकर्षक होना ज़रूरी है। साथ ही बाज़ार में सहज उपलब्ध तैयार मिलने वाली चित्रण सामग्री ने भी लोक चित्रकारों को आकर्षित किया है। इनके सरल प्रयोग और अच्छे नतीजों ने भी लोक चित्रकारों को इनके उपयोग हेतु प्रेरित किया है। यह अपारंपरिक चित्रण सामग्री अब परंपरागत सामग्री का स्थान बहुत तेज़ी से ले रही हैं।

चित्र 4.4: स्याही

कपड़ा एवं दीवार रंगने के लिए उपयोग में आने वाले पिगमेंट पाउडर कलर : लोक चित्रकारों द्वारा इनका उपयोग सबसे पहले आरंभ किया गया। चमकीले एवं विभिन्न छटाओं में गाँवों की छोटी-छोटी पंसारी की दुकानों पर भी उपलब्ध इन रंगों को कपड़ा रंगने या होली के रंग भी कहा जाता है। इनके साथ ही दीवाली पर खुले आम बेचे जाने वाले मकानों की पुताई हेतु प्रयोग किए जाने वाले चूने के रंग भी लोक कलाकारों द्वारा प्रयोग किए जाने लगे हैं।

लिखने के उपयोग में आने वाली स्याही : कागज़ पर लोक चित्रों के बनाए जाने के चयन के साथ ही बाज़ार में उपलब्ध विभिन्न रंगों की स्याही; जैसे- काली, लाल, हरी एवं नीली स्याही का उपयोग भी आरंभ हो गया है। साधारण तरल स्याही एवं सूखी टिकिया के रूप में उपलब्ध काली स्याही के साथ-साथ वाटर प्रूफ स्याही का भी प्रयोग किया जाने लगा है। विशेषत: मधुबनी लोकचित्र शैली के चित्रकारों में इनका प्रयोग बहुतायत से होता है। वर्तमान में गोंड आदिवासी चित्रकार रॉटरिंग ब्लैक इंक का प्रयोग बहुतायत से करते हैं।

पोस्टर कलर : बाज़ार में तैयार उपलब्ध पोस्टर कलर आदिवासी एवं लोकचित्रों की महत्वपूर्ण चित्रण सामग्री बन गए हैं। इनका उपयोग बाज़ार में बेचने हेतु बनाए गए चित्रों के साथ-साथ

अनुष्ठानिक एवं घरों की सज्जा हेतु बनाए जाने वाले चित्रों में भी हो रहा है। वार्ली आदिवासी अब सफ़ेद रंग हेतु चावल के आटे के स्थान पर सफ़ेद पोस्टर कलर ही प्रयोग करते हैं।

फैब्रिक एवं एक्रायलिक रंग : इन रंगों का प्रयोग आदिवासी एवं लोक चित्रों के कपड़े एवं कैनवास पर बनाए जाने के साथ आरंभ हुआ। भील, गौण्ड, वार्ली आदिवासियों एवं मधुबनी के लोक चित्रकारों ने इनका प्रयोग आरंभ किया और वर्तमान में यह सबसे अधिक प्रयोग कागज़, कपड़ा, कैनवास, लकड़ी, कागज़ की लुगदी से बने खिलौने, मिट्टी के बर्तनों आदि सभी पर समान रूप से किया जाने लगा है।

तैल रंग : तैल रंगों का उपयोग भी अब बाज़ार में बेचने हेतु कैनवास पर बनाए जाने वाले आदिवासी एवं लोक चित्रों में हो रहा है। गुजरात के राठवा आदिवासी इनका प्रयोग बहुतायत से कर रहे हैं। बस्तर के मुरिया एवं माडिया आदिवासी तथा मध्यप्रदेश के भील आदिवासी तैल रंगों से चित्रकारी करते हैं। नए किस्म के रंगों के उपयोग के प्रचलन के साथ चित्रकारी हेतु उपयोग होने वाली कूचियों आदि में भी बदलाव आया है। घास एवं बाँस की तीलियों तथा टहनियों से बनी कूचियों के स्थान पर क्राकल, पेन, रेडीमेड ब्रुश आदि का प्रयोग होने लगा है।

चित्रण पद्धतियाँ : सामान्यत: पारंपारिक आदिवासी एवं लोक चित्र दीवार अथवा भूमि पर बनाए जाते हैं, जिसके लिए पहले गोबर-मिट्टी घोल से लिपाई कर पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। सूती कपड़े के एक टुकड़े को गोबर-मिट्टी या केवल मिट्टी के घोल में डुबाकर उससे लिपाई की जाती है। इसमें सूखने पर कूची की सहायता से रेखांकन किया जाता है। अधिकांशत: चित्र मुक्त हस्त चित्रण और एक रंगीय होते हैं, परंतु बहुरंगी चित्रों का अंकन करते समय सबसे पहले काले रंग से बाह्य रेखांकन कर तदुपरांत विभिन्न रंग भरे जाते हैं। बनावट की दृष्टि से चित्रण पद्धतियों को दो वर्गों मे रखा जाता है।

1. मुक्त हस्त चित्रण
2. ग्राफ़ आधारित चित्रण

मुक्त हस्त चित्रण : बाज़ार हेतु अथवा जीविकोपार्जन हेतु कागज़, कपड़े या कैनवास पर बनाए जाने वाले अधिकांश आदिवासी लोक चित्रों के अतिरिक्त दीवार पर बनाए जाने वाले अनुष्ठानिक पारंपरिक चित्र मुक्त हस्त चित्रण होते हैं। मधुबनी चित्र, वार्ली चित्र, गोंड चित्र, पिठौरा चित्र, पटुआ एवं पट चित्र, मांडना आदि अधिकांश भूमिचित्र जैसे अल्पना, कलम, कोलम, रंगोली और मंडन भी ग्राफ़ आधारित पद्धति से बनाए जाते हैं। ग्राफ़ आधारित चित्रों का स्वरूप ज्यामितीय रूप होता है। इन्हें बनाने के लिए भूमि पर समान दूरी पर रंग के सूखे चूर्ण से बिंदु रखे जाते हैं। बिंदुओं का फैलाव बनाए जाने वाले चित्र के अनुरूप रखा जाता है। इसके बाद विभिन्न बिंदुओं को मिलानेवाली सरल अथवा वक्रीय रेखाएँ खींची जाती हैं, जिससे चित्र का मूल आकार उभर आता है। अब रंग योजना के अनुरूप विभिन्न स्थानों पर रंग भरकर चित्रांकन पूर्ण कर लिया जाता है। ग्राफ़ आधारित पद्धति से चित्रांकन बिहार, महाराष्ट्र, ओड़ीसा, गुजरात, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि मे अधिक प्रचलित है।

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 4.3

बहु विकल्पीय प्रश्न :

1. चित्रकला की किसी एक अपरंपरागत सामग्री का नाम है-

   (i) स्याही (ii) पत्ता

   (iii) फूल (iv) बाँस

2. चित्र बनाने के लिए किसी एक प्रकार के रेखाचित्रों का नाम है-

   (i) सामग्री (ii) सार

   (iii) ग्राफ़ (iv) इनमें से कोई नहीं

आपने क्या सीखा

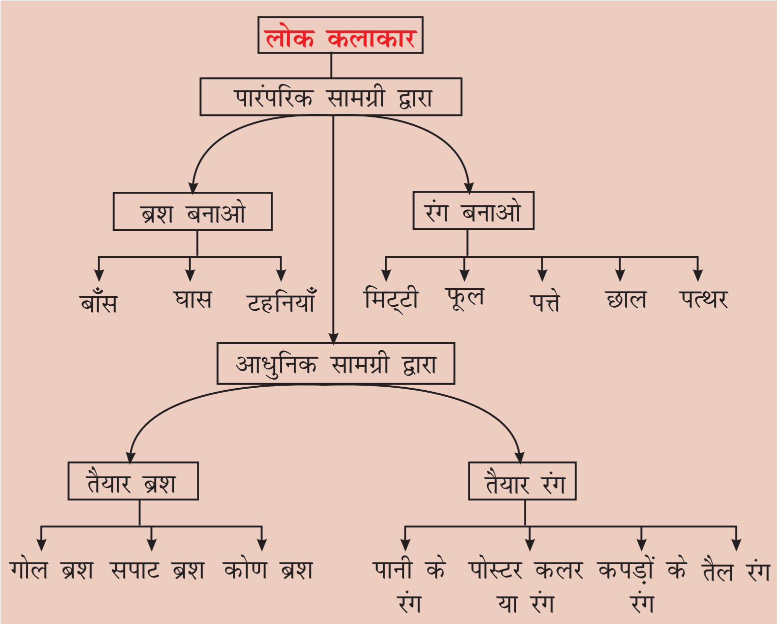

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- विभिन्न कृतियों के लिए पारंपरिक एवं अपारंपरिक विधियाँ और सामग्री प्रयोग कर सकते हैं।
- स्थानीय रूप से आसानी से उपलब्ध सामग्री से विभिन्न रंग आभाओं का निर्माण कर सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. मानव ने चित्रण पद्धतियों एवं सामग्री का विकास किस प्रकार किया?
2. लोकचित्रकारों की व्यवसायिक जातियों ने चित्रण सामग्री एवं पद्धतियों के विकास में क्या योगदान दिया?
3. आदिवासी लोक चित्रण में प्रयुक्त होने वाली पारंपरिक सामग्री की सूची बनाओ।
4. आदिवासी लोक चित्रकार चित्रण हेतु कूचियाँ किस प्रकार बनाते हैं?
5. लोक चित्रकार तूलिकाएँ बनाने हेतु किन पशुओं के बालों का प्रयोग करते हैं, सूची बनाइए।
6. शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप आदिवासी लोक चित्रण सामग्री में क्या अन्तर आया?
7. आदिवासी लोक चित्रकला में प्रयुक्त होने वाली अपारंपरिक सामग्री की सूची बनाइए।
8. पारंपरिक रूप से सफ़ेद रंग किन-किन सामग्रियों से प्राप्त किया जाता है?
9. लोक चित्रकार द्वारा रंग किस प्रकार बनाते हैं?
10. लोककला में प्रयुक्त होने वाली समसामयिक सामग्री के बारे में बताइए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. मानव ने प्रकृति के अध्ययन एवं उसकी घटनाओं से प्रेरित होकर विभिन्न चित्रण पद्धतियों का विकास किया।
2. उन्होंने प्रकृतिक उपादनों एवं वस्तुओं के निरीक्षण एवं परिक्षण से आस-पास सहज उपलब्ध सामग्री का चित्रण हेतु समुचित उपयोग करना सीखा।
3. यह चित्र अधिकांश सफ़ेद मिट्टी या चूने तथा गेरू से बनाए गए हैं।
4. यहाँ प्राप्त बर्तनों एवं खिलौने पर सफ़ेद मिट्टी या चूना, काली मिट्टी एवं गेरू का प्रयोग रंगाकन हेतु किया गया है।

4.2

1. बाँस तथा बालों
2. बाँस

4.3

1. (i) स्याही
2. (iv) ग्राफ़

शब्दकोश

पिगमेंट : रंग चूर्ण

स्क्रीनप्रिंट : मेश द्वारा स्याही भरने की तकनीक

ग्राफ़ : लेखाचित्र